प्रश्नः

''ज़्या कलीसिया के सदस्यों को एक होना चाहिए?''

उज़रः

यूहन्ना 17 अध्याय में यीशु ने प्राथमिक चेलों के साथ उन सब लोगों के लिए जिन्होंने उसकी बात मानकर उसके पीछे चलने था प्रर्थना की: ''मैं केवल इन्हीं के लिए बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे ज़ी हम में हों, इसलिए कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा'' (यूहन्ना 17:20, 21)। कुरिन्थुस के मसीहियों के नाम पत्र लिखते समय पौलुस ने उनमें एकता के बारे में लिखा।

हम आपस में भाई हैं

पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीहियों को यह समझने में सहायता करने के लिए कि उनका एक दूसरे से कैसा सज़्बन्ध होना चाहिए कई शज़्दों का इस्तेमाल किया। परमेश्वर के सामने पवित्र जीवन जीने के लिए पाप में से बुलाए होने के सज़्बन्ध में, उन्हें पवित्र लोग कहा गया (1 कुरिन्थियों 1:2)। एक दूसरे के भाग होने के सज़्बन्ध में पौलुस ने उन्हें एक देह के अंग कहा (1 कुरिन्थियों 12:12, 27)। सबसे अधिक बार इस्तेमाल की जाने वाली व्याज़्या यह थी कि वे एक ही परिवार के सदस्य हैं और इस कारण आपस में भाई हैं। उसने ऐसे से उन्हें कम से कम बीस बार सज़्बोधित किया (1:10, 11, 26; 2:1; 3:1; 4:6; 7:24, 29; 10:1; 11:33; 12:1; 14:6, 20, 26, 39; 15:1, 31, 50, 58; 16:15)। उसने उन्हें यह भी बताया कि जी उठा मसीह ''पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया'' था (1 कुरिन्थियों 15:6) और इफिसुस के रहने वाले ''सब भाइयों'' ने अपने कुरिन्थी भाइयों को सलाम भेजा था (1 कुरिन्थियों 16:20)।

कुरिन्थुस में रहने वाले भाई एक ही सांसारिक परिवार के सदस्य नहीं थे। पौलुस ने ''प्रभु के भाइयों'' (1 कुरिन्थियों 9:5) का हवाला देकर मूल परिवार की ही बात की थी। पौलुस के ध्यान में यूसुफ और मरियम के परिवार से यीशु के सौतेले भाई ''याकूब और

योसेस और यहूदा और शमौन'' थे (मरकुस 6:3)। पौलुस ने सोचा कि कुरिन्थुस में परमेश्वर के आत्मिक परिवार के सम्बन्ध में सुझाव देने के लिए भौतिक परिवार में पाए जाने वाले सम्बन्ध से अच्छी तरह समझाया जा सकता है।

एक घराने के परिवार होने (जैसे यूसुफ और मरियम और उनके बच्चों के) से भी बड़ा विचार किसी की संतान के परिवार होने का है। हर यहूदी एक आदमी अर्थात अब्राहम को अपने पूर्वज के रूप में देखता था (मत्ती 3:9)। जब हनन्याह ने शाऊल को ''भाई'' (प्रेरितों 9:17) कहा तो वह राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में पारिवारिक शब्द का इस्तेमाल कर रहा था। शाऊल हनन्याह का यहूदी भाई था और बपतिस्मा लेने के बाद वह प्रभु में हन्नयाह का भाई बन गया था।

हम एक आत्मिक परिवार हैं

पवित्र आत्मा को मसीही लोगों को एक आत्मिक परिवार बनने, मनुष्य के प्राकृतिक परिवार के नमूना पर बनने और फिर कौम परिवार बनने के लिए कहना अच्छा लगा। कोई भी नमूना पूर्ण नहीं है, परन्तु इस रूपक का काफी अर्थ है। आत्मिक परिवार में परमेश्वर की पत्नी के रूप में कोई मां नहीं होती, लेकिन पिता (1 यूहन्ना 3:1), बड़ा भाई (रोमियों 8:29) और भाई और बहनें अवश्य होते हैं (इब्रानियों 2:11)।

आत्मिक रूप में, पापियों को परमेश्वर पिता द्वारा (याकूब 1:18) परमेश्वर के वचन के द्वारा (1 पतरस 1:23) दूसरी बार जल और आत्मा से जन्म लेने के कारण (यूहन्ना 3:5) जन्म दिया गया है। वे उस बड़े भाई के भाई और बहनें बन जाते हैं (और वह उनसे नहीं लजाता; इब्रानियों 2:11)।

हम प्रेम में एक दूसरे के साथ जुड़े हैं

जैसे एक मजबूत सांसारिक परिवार भाईचारे के प्रेम का आनन्द उठाता है वैसे ही परमेश्वर ने अपने आत्मिक परिवार के लिए भाइयों के प्रेम का आनन्द उठाने की योजना बनाई थी। यूनानी शब्द *फिलाडेल्फिया* जिसका अर्थ ''भाइचारे की प्रीति'' है उस शहर का नाम था जहां एशिया की सात में से एक कलीसिया थी (प्रकाशितवाक्य 3:7) और इस नाम को अमेरिकी महानगर द्वारा ''भाईचारे की प्रीति का नगर'' के रूप में अपनाया गया है। हैरानी की बात नहीं कि पवित्र आत्मा को *फिलाडेल्फिया* के विषय में काफी कुछ लिखना था:

> *भाईचारे के प्रेम* [*फिलाडेल्फिया*] से एक दूसरे पर दया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो (रोमियों 12:10)

> किन्तु भाईचारे की प्रीति [*फिलाडेल्फिया*] के विषय में यह आवश्यक नहीं, कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूं; क्योंकि आपस में प्रेम रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है। और सारे मकिदुनिया के सब भाइयों के ऐसा करते भी हो,... (1 थिस्सलुनीकियों 4:9-11)।

भाईचारे की प्रीति [*फिलाडेल्फिया*] बनी रहे (इब्रानियों 13:1)।

सो जब कि तुम ने *भाईचारे की* निष्कपट *प्रीति* [*फिलाडेल्फिया*] के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो (1 पतरस 1:22)।

हमें एकता का पीछा करना चाहिए

एकता होना सुखद और अच्छा है

देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें! यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया। वा हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है (भजन संहिता 133:1-3)।

हमारे लिए कुछ चीज़ें अच्छी हैं परन्तु सुखद नहीं है: उदाहरण के लिए, काम (देखिए तीतुस 3:14) और अनुशासन (नीतिवचन 13:24; इब्रानियों 12:11)। कुछ चीज़ें सुखद होती हैं, परन्तु हमारे लिए अच्छी नहीं होतीं: ''पाप का सुख'' (इब्रानियों 11:25), ज़रूरत से अधिक सोना और ज़रूरत से अधिक खाना (नीतिवचन 6:10, 11; 23:21)। किसी ने कहा है कि जिस चीज़ का भी उसके पास आनन्द है वह या तो अवैध, अनैतिक या मोटा करने वाला था! एक चीज़ एक ही समय में सुखद और अच्छी भी है और वह है दिल-ओ-जान से भाइयों के साथ मिलकर रहना।

एकता से मिलने वाले सुख को समझने की सहायता के लिए, पवित्र आत्मा ने गंधरस, सुगंधित दाल-चीनी, सुगंधित अगर, तज, जलपाई का तेल मिले सुगंधित तेल का उदाहरण इस्तेमाल किया (निर्गमन 30:23-33)। यह मिश्रण ''गंधी की रीति से तैयार किया हुआ, अभिषेक का पवित्र तेल'' होना था। याजक के अलावा किसी दूसरे को इस अभिषेक की अनुमति नहीं थी। हर याजक से निकलने वाली मोहक सुगंध की तुलना भाईचारे की एकता की सुगंधि से की जा सकती थी।

दाऊद ने भाईचारे की एकता के महत्व को समझाने के लिए एक और उदाहरण का इस्तेमाल किया गया है: जब हेर्मोन पर्वत (9200 फुट ऊंचा) की बर्फ़ पिघलकर,120 मील दक्षिण की ओर जाकर सिय्योन पर्वत (2500 फुट ऊंचा) पर ओस बनकर गिरती थी। यरूशलेम के रहने वाले यहूदी बागानों और फूलों पर गिरी ओस को देखकर खुशी प्रकट करते थे। सही सोच रखने वाले किसी भी व्यक्ति को भाइयों को इकट्ठे रहते और काम करते देखकर वैसे ही खुश होना चाहिए।

झगड़ा बुरा है

भाइयों के इकट्ठे होकर रहने और काम करने में असफलता को कैन के अपने भाई की हत्या करने और बीस वर्षीय इस्माएल द्वारा अपने भाई के दूध छुड़ाने के समय ठट्ठा करने में देखा जाता है (उत्पत्ति 4:8; 21:9)। इसी तरह जब याकूब ने अपने जुड़वां भाई को धोखा दिया, तो हैरानी की बात नहीं कि ''एसाव ने याकूब से बैर रखा'' (उत्पत्ति 27:41) और उसकी हत्या करने की योजनाएं बनाईं। भाइयों में झगड़ा कराने वाला परमेश्वर की नज़र में घिनौना है (देखिए नीतिवचन 6:16-19)। इन चेतावनियों और उदाहरणों के बावजूद ऐसे भाई और बहनें हैं जो ''एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते'' हैं और ''झूठे भाई'' भी होते हैं (गलतियों 5:15; 2:4)।

अलग रहना शांतिदायक हो सकता है

जैसे इकट्ठे रहना आवश्यक है वैसे ही अलग रहना भी बुरा है, बिल्ली-कुत्ते की तरह एक दूसरे को काटते और खाते रहने से दोनों भाइयों के प्राणों की हानि होगी। समझदार इब्राहीम ने यह देखकर कि लूत के लोगों के साथ इकट्ठा रहने से क्या होने वाला है, मित्रतापूर्वक अलग होने की सलाह दी थी। वह जानता था कि किसी भी परिस्थिति में उनमें झगड़ा नहीं होना चाहिए, ''क्योंकि हम लोग भाई बंधु हैं'' (उत्पत्ति 13:8)। अलग-अलग रहना कोई आदर्श स्थिति नहीं थी, परन्तु दो बुराइयों में से यह कम बुराई थी, और इब्राहीम ने इसका लाभ उठाया।

जब पौलुस और बरनबास में ''टंटा हुआ'' (प्रेरितों 15:39) जिसमें इन दो अच्छे भाइयों के बीच समझौता होने की कोई गुंजाइस नहीं थी, तो अलग होने का ढंग ही बेहतर था। इसी तरह, कई मण्डलियों में, आपस में झगड़ा रहने के बजाय कई बार प्रभु के काम को और अच्छी तरह से करने के लिए अलग होना ही ठीक रहता है।

धार्मिकता अलगाव की मांग कर सकती है

ऊपर दिए गए उदाहरणों में, अलग होने के लिए आवश्यक सही या गलत सिद्धांत नहीं है, परन्तु ऐसे मामले हैं जिनमें इकट्ठे रहना ठीक नहीं होता। कुरिन्थुस की कलीसिया के लिए किसी सदस्य को बाहर निकालना आनन्ददायक नहीं था, परन्तु संगति में ऐसे व्यक्ति को रखने का दाम इससे भी अधिक था (1 कुरिन्थियों 5:13)।

पौलुस ने यरूशलेम के यहूदी मसीहियों से खतने के प्रश्न पर एकता रखने की इच्छा की। उसने हमेशा सब लोगों के लिए सब कुछ बनने की कोशिश की (1 कुरिन्थियों 9:22)। परन्तु, जब इसका अर्थ यह हुआ कि एक अन्यजाति मसीही को खतना के लिए मजबूर किया जाए, तो पौलुस को लगा कि एकता का यह दाम कुछ ज्यादा ही है। पौलुस ने भाइयों की यह मांग ठुकरा दी ''उन के आधीन होना हम ने एक घड़ी भर न माना, इसलिए कि सुसमाचार की सच्चाई तुम में बनी रहे'' (गलतियों 2:5)। आज जब भाई एकता के नाम पर यह मांग करते हैं कि कोई बाइबल ग्लास नहीं होनी चाहिए, कलीसिया की सहायता पर

निर्भर कोई अनाथालय नहीं होना चाहिए, कलीसिया में कोई सहयोग नहीं होना चाहिए, तो वे नियम बनाने वाले लोग बन गए हैं। जो लोग यह मानते हैं कि कलीसिया अपनी स्वतन्त्रता में कायम रहे (देखिए गलतियों 5:1) वे फूट होने पर भी बाइबल ज़्लासों, अनाथालयों और एक महान कार्य के लिए कलीसिया का सहयोग करने से नहीं रुकेंगे।

इसी तरह झूठी शिक्षा के सज्बन्ध में, हर व्यज़्ति को स्वयं फैसला लेना चाहिए कि कहां तक सहना सही है। बाइबल के अनुसार, कई बार ऐसा समय आता है जब मनुष्यों की नहीं बल्कि परमेश्वर की बातें माननी आवश्यक होती है: ''अब हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो'' (रोमियों 16:17)।

हमें ''प्रचारकों के अनुयायी'' बनने से बचना चाहिए

1 कुरिन्थियों का स्पष्ट है संदेश यह था कि उस नगर में परमेश्वर के लोग बुरी तरह से ''प्रचारकों के अनुयायी'' बन गए थे। ''कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफा का, कोई मसीह का'' (1 कुरिन्थियों 1:12) कहते हुए धड़ों में बंट गए थे।

बेशक ''प्रचारकों के अनुयायी'' होना पाप है, परन्तु प्रचारकों का महत्व इससे कम नहीं हो जाता। पापियों को उनके उद्धारकर्ज़ा तक लाने की कड़ी के रूप में, वे स्वर्ग की योजना के भाग हैं (रोमियों 10:13-15)। फिर भी प्रचारक अपने आप में कुछ नहीं हैं। अपने तौर पर वे किसी पर अनुग्रह नहीं कर सकते। पौलुस ने लिखा है:

> अपुल्लोस ज़्या है? और पौलुस ज़्या है? केवल सेवक, जिन के द्वारा तुम ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया। मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। इसलिए न तो लगानेवाला कुछ है, और न खींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है (1 कुरिन्थियों 3:5-7)।

सदियों से, बड़े-बड़े प्रचारकों द्वारा भोले-भाले लोग मसीह के बजाय मनुष्यों की ओर खिंचते रहे हैं।

सारांश

मसीही होने के नाते हमारी वफ़ादारी किसी प्रचारक या ऐसे अगुवे पर नहीं होनी चाहिए जिसकी हम प्रशंसा करते हैं, बल्कि केवल मसीह पर होनी चाहिए। नये नियम में यीशु पर केन्द्रित एकता का मापदण्ड केवल प्रेरितों की शिक्षा में मिलता है (प्रेरितों 2:42)। इसमें हमें समझ आता है कि धर्म में सत्य ज़्या है और झूठ का आत्मा ज़्या है (1 यूहन्ना 4:6)। ''विश्वास की एकता'' केवल नये नियम में ही सज्भव है (इफिसियों 4:13)। हमें मसीह पर ध्यान लगाना चाहिए जो ''मार्ग और सच्चाई और जीवन'' है (यूहन्ना 14:6)। व्यावहारिक रूप में ऐसा करने के लिए, हमारे लिए ''सुसमाचार के सत्य वचन'' (कुलुस्सियों 1:5) को महत्व देना आवश्यक है।